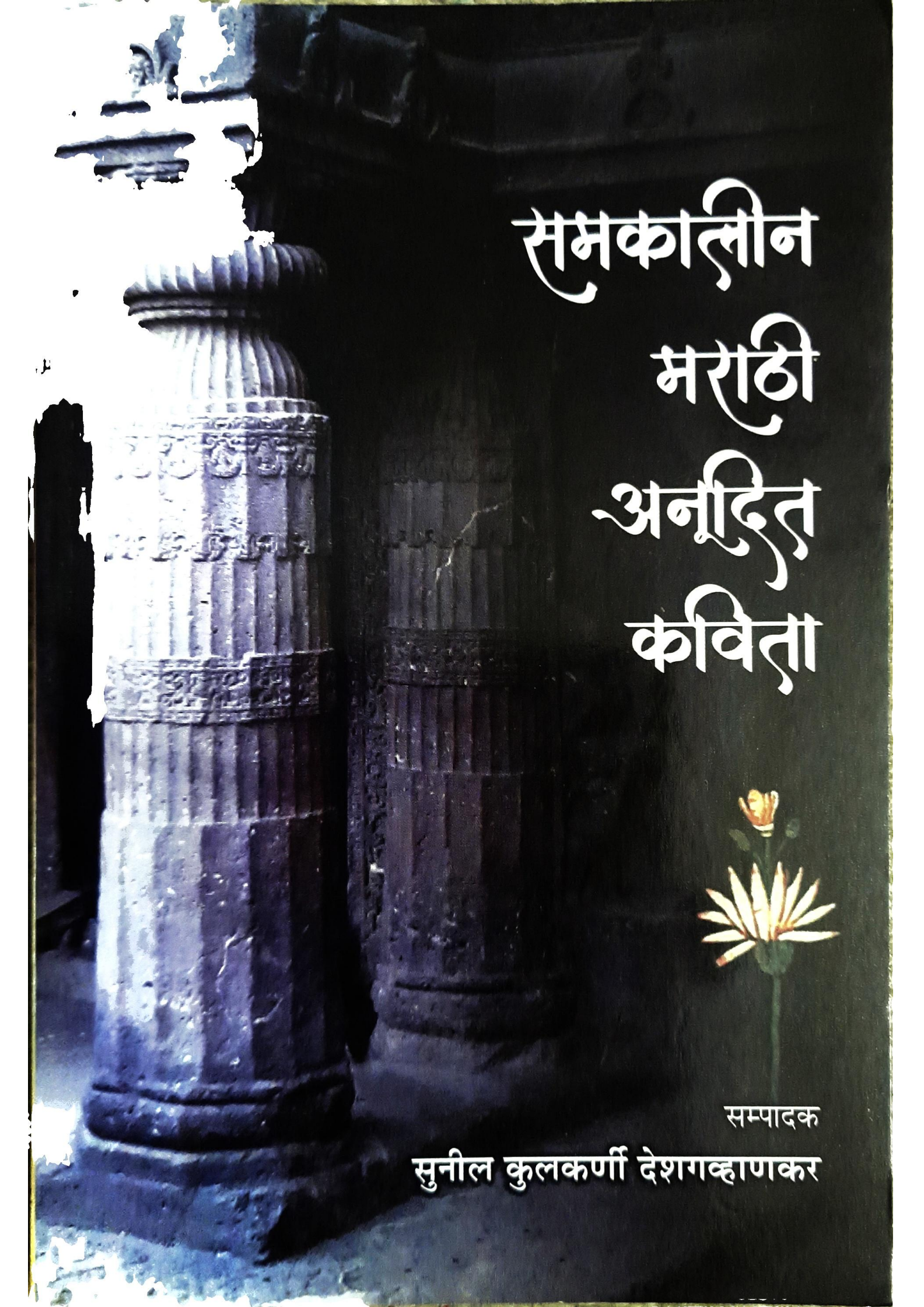

समकालीन मराठी अनूदित कविता

सम्पादक
सुनील कुलकर्णी देशगव्हाणकर

सम्पादन मंडल

प्रोफेसर शिवाजी सांगोळे
प्रोफेसर भारती गोरे
प्रोफेसर बळीराम धापसे
प्रोफेसर प्रमोद पाटील
डॉ भगवान गव्हाड़े
प्रोफेसर आबासाहेब राठोड़
डॉ. सुरेश मुंढे
प्रोफेसर विजय कुमार वैराटे
प्रोफेसर ललिता राठोड़
प्रोफेसर सुनील कुलकर्णी
डॉ. विनोद कुमार वायचळ
डॉ. शेखर घुंगरवार
प्रोफेसर सय्यद शौकत अली

समकालीन मराठी अनूदित कविता

सम्पादक

सुनील बाबुराव कुलकर्णी
देशगव्हाणकर

राजकमल प्रकाशन

ISBN : 978-93-93768-82-7

मूल्य : ₹95

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2022

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017
वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

SAMKALIN MARATHI ANUDIT KAVITA
Edited by Dr. Sunil Baburao Kulkurni

क्रम

भूमिका कथन 7
समकालीन मराठी कविता : विकासात्मक परिचय 11
मराठवाड़ा की समकालीन मराठी अनूदित कविता अतीत और वर्तमान 21

मराठवाड़ा के प्रमुख कवियों की
प्रमुख चयनित कविताएँ

रेणु पाचपोर **29**
नदी 31
सब कुछ कहना हुआ 32
इन्द्रजीत भालेराव **34**
तथास्तु 37
बाप बेटा 38
भगवान धांडे **40**
घर 42
अन्नदाता किसान मेरा 44
ऋषिकेश कांबळे **45**
चिरन्तन दु:ख का सनातन रिश्ता 48
महामानव 49
श्रीकान्त देशमुख **51**
गाँव गाँव का आसमान 54
वे नहीं करते हैं बात 55
उर्मिला चाकूरकर **56**
पत्थर का भगवान होते हुए 59
पांडुरंग प्रसन्न होता है... 61
केशव देशमुख **62**
ढाल 64
मिट्टी का गाना 65
प्रभाकर शेळके **66**
इस मानवता के द्वीप पर 69
देह हृदय का मन्दिर, साँस है परमेश्वर 70

श्रीधर नांदेडकर 71
भूमिका 74
वायलिन 76
दासू वैद्य 78
राजघाट 81
सुनता रहता हूँ 82
प्रिया धारूरकर 84
बिना नमक 87
जादूगर 89
श्रीकान्त उमरीकर 91
दरवाजा तो खोलो जरा... 93
द्वीपों का मन्दिर 94
संजीवनी तडेगावकर 96
सहज मातृत्व 99
कालवड (बछिया) 101
पी. विठ्ठल 103
मिट्टी की ही तरह पवित्र होना 106
पटकथा 108
संध्या रंगारी 110
नौ महीने के लिए 112
बचपन से ही आँचल में छिपाया 113
विनायक पवार 115
बेटी 118
पग चिह्न 119
पृथ्वीराज तौर 120
सीता 123
बादलों जैसे शब्दों के अर्थ 125
हबीब भंडारे 127
सकीना बेगम और जवानी से भरी रात 129
गरीबी से ग्रस्त कर्म का भाष्य 131
वी.रा. राठौड़ 132
मैं रोटी तलाशता हूँ तुम गीत गुनगुनाती रहना 134
लहू रिसते सलीब की टीस 137
विश्वाधार देशमुख 139
जिसकी कोख से जन्म होता 142
माँ होती है झूले का बल 143

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

जन्म : 01 जून, 1975 को महाराष्ट्र के जालना जिले के देशगव्हाण में।

शिक्षा : एम.ए.; एम.फिल.; पी-एच.डी. ; सेट तथा बी.जे. (पत्रकारिता)

प्रमुख कृतियाँ : कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रगतिशील चेतना, समकालीन साहित्य विमर्श, सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत कवि, भाषिक संप्रेषण, हिन्दी लेखन कौशल विकास और प्रयोजनमूलकता (सन्दर्भ पुस्तकें); संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएँ, राष्ट्रभाषा हिन्दी : कितनी सही कितनी प्रेरक, भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता, हिन्दी साहित्य : अधुनातन आयाम, संत साहित्य : अधुनातन आयाम (सम्पादित पुस्तकें); ढोता हूँ कविता की पालकी, भारतीय गाँव : अर्थ एवं राजनीति, जनसंख्या अध्ययन : मूल्यांकन अनुसंधान, दमन, पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व के विविध पहलू, व्हाट्सएप्प और प्राणियों की अन्य कथाएँ, सामाजिक समरसता : स्वरूप एवं अवधारणा (मराठी से हिन्दी में अनुवाद); दर्जनभर पाठ्यपुस्तकों का सम्पादन।

सम्प्रति : हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा अध्यक्ष हिन्दी अध्ययन मंडल, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव (महाराष्ट्र)।

ई-मेल : sunilkulkarni38@gmail.com

आवरण परिकल्पना : राजकमल स्टूडियो

कविता

₹95

9 789393 768827

राजकमल प्रकाशन

www.rajkamalprakashan.com

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के स्नातकोत्तर हिन्दी प्रथम वर्ष के वैकल्पिक प्रश्न-पत्र हेतु निर्मित पाठ्य-पुस्तक 'समकालीन मराठी अनूदित कविता' छात्र तथा अध्यापकों की सेवा में समर्पित करते हुए हम परम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली और भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के मार्गदर्शक तत्त्वों के अनुसार, हमने स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी का पाठ्यक्रम 'अस्सी प्रतिशत वैश्विक और बीस प्रतिशत लोकल' रखने का प्रयास किया है। उसी नीति के तहत हमने मराठवाड़ा के सात जिलों में रहने वाले बीस मूल मराठी भाषी समकालीन कवियों की कुल चालीस अनूदित कविताओं का यह संकलन पाठ्यक्रम में लगाने का निर्णय लिया है।

संकलन की कविताओं और कवियों का चयन करते समय यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखी गई है कि चयनित कवि मूलत: मराठवाड़ा प्रान्त से ही सम्बन्धित हों। समकालीन मराठी अनूदित कविता से यहाँ हमारा अभिप्राय सन् 1950 के बाद जन्मे और अस्सी के दशक के आस-पास से मराठी कविता का लेखन करने वाले तथा सन् 1980 के आस-पास में जन्मे और सन् 2000 से 2021 तक की कालावधि में कविता लेखन करने वाले कवियों की अनूदित कविता हैं। इन सारे कवियों के मूल मराठी भाषी होने के कारण हिन्दी के छात्र प्राय: उनसे अनभिज्ञ हैं। इन सभी कवियों के मराठवाड़ा की मिट्टी में पले-बढ़े होने के कारण इनकी कविताओं में मिट्टी की सोंधी सुगन्ध के साथ-साथ मराठवाड़ा की भूमि पर घटित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का यथार्थ चित्र अंकित हुआ है। उसे जानने और समझने में छात्रों को निश्चित रूप से सहायता मिलेगी, ऐसा हमें पूरा विश्वास है।